पुकारो
"या रसूलल्लाह"
(कुरआन और हदीस की रौशनी में
"या रसूलल्लाह" कहने का सुबूत)
-: अज़ :-
मुजद्दिदे अअ्ज़म अअ्ला हज़रत इमाम-ए-अहले सुन्नत
इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरेलवी रहमतुल्लाह तआला अलैह
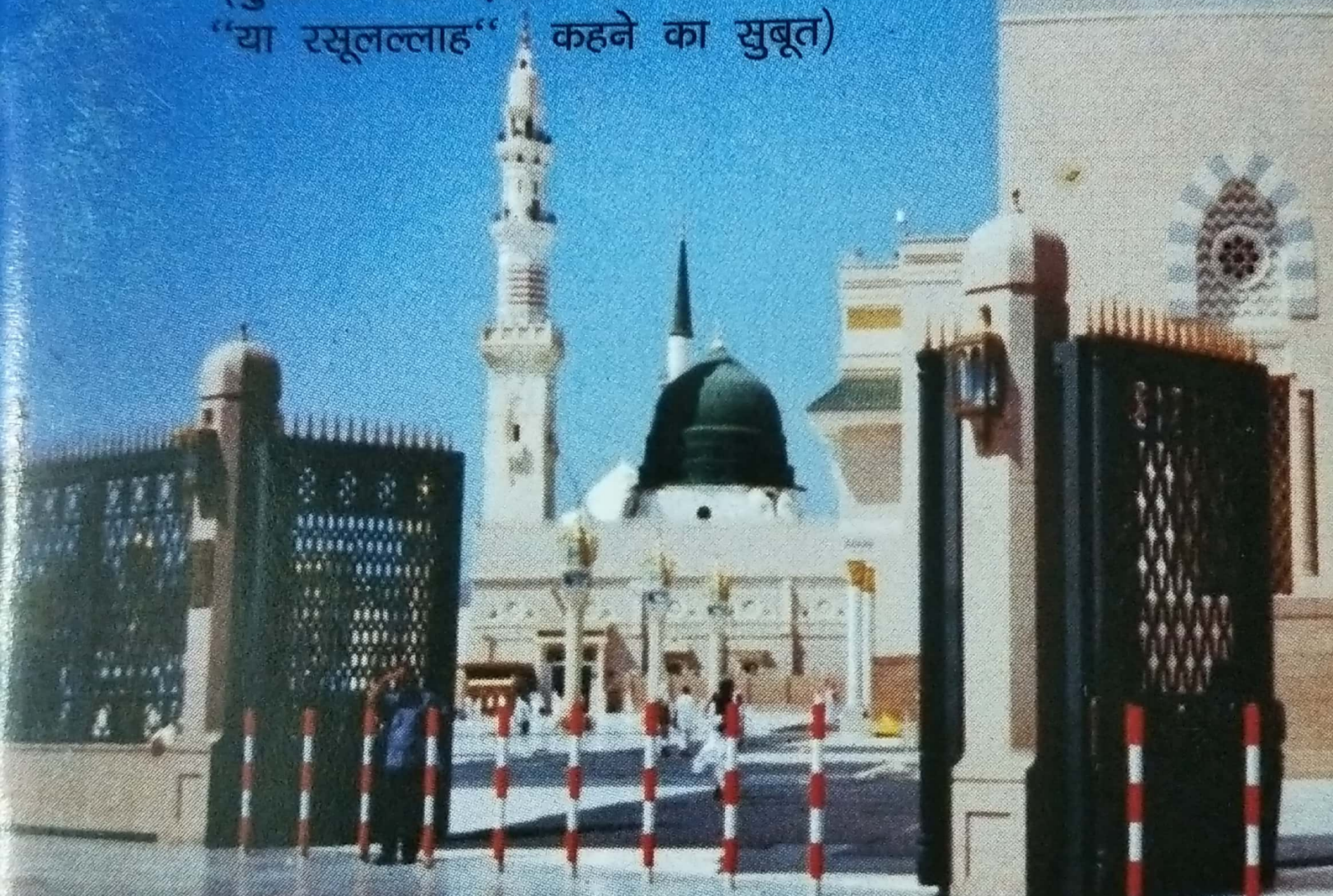
بسم الله الرحمن الرحيم

الصلوة والسلام عليك يا رسول الله ﷺ

ग़ैज़ में जल जाएँ बेदीनों के दिल।
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिए।

बैठते–उठते मदद के वास्ते
या रसूलल्लाह कहा फिर तुझको क्या ?

फ़रयाद उम्मती जो करे हाले ज़ार में।
मुमकिन नहीं के ख़ैरुल बशर को ख़बर न हो।

गुलामाने नबी महशर में यूँ पहचाने जाएँगे।
होगा हश्र में भी उनका नारा या रसूलल्लाह।
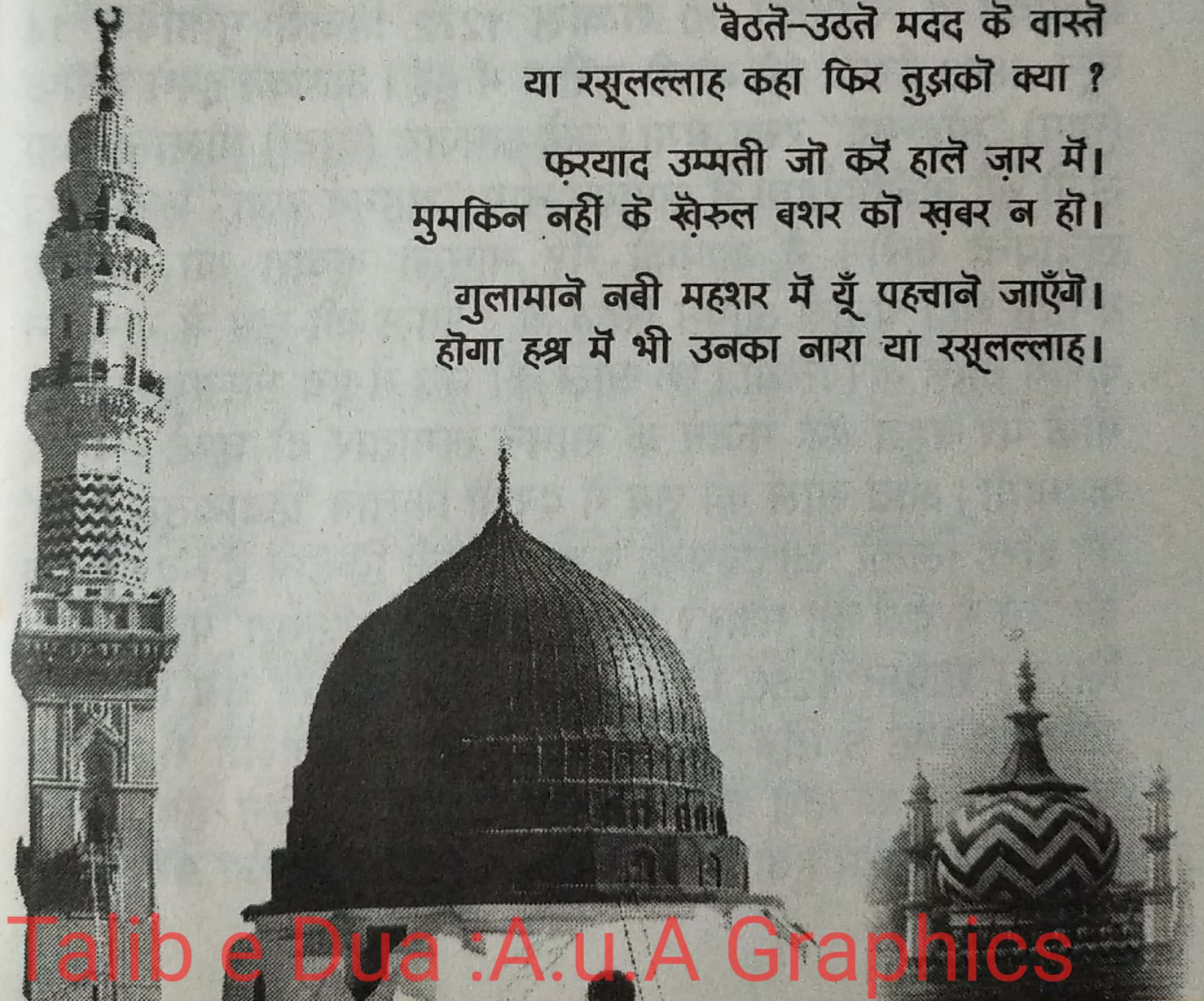
اپیل

- اپنے اندر اتحاد پیدا کیجئے آپ کے اسلاف جن راہوں پر چلے تھے انہی راہوں پر چلئے۔ روٹھے ہوؤں کو منائیے۔ اپنے ایذا بھی دیں تو صبر کیجئے امام احمد رضا کا یہی فرمان ہے۔
- خوش اخلاقی، حسن معاملہ اور وعدہ وفائی کو اپنا شعار بنائیے۔
- قرض ہر صورت میں ادا کیجئے کہ شہید کے تمام گناہ معاف کر دیئے جاتے ہیں لیکن قرض معاف نہیں کیا جاتا۔
- تحریری، تقریری، نعتیہ مقابلوں میں اور دیگر مواقع پر انعامات میں علماء اہلِ سُنّت کی تصانیف تحفتہً دیجئے۔
- ہر شہر اور ہر محلہ میں لائبریری قائم کیجئے اور اس میں علماء اہلِ سُنّت کا لٹریچر ذخیرہ کیجئے یہ تبلیغِ دین کا اہم ترین ذریعہ ہے۔
- ہر شہر میں سُنّی لٹریچر فراہم کرنے کے لئے کتب خانہ قائم کیجئے یہ تبلیغ بھی ہے، اور بہترین تجارت بھی۔

RAZA OFFSET BOMBAY-3 • TEL :

इमाम अह़मद रज़ा का तआ़रुफ़

अज़ : सैयद अ़ज़ीमुद्दीन रज़वी
(सदर – अंजुमन–ए–ग़ौसिया रज़विया)

मुजद्दिदे अअ्ज़म हुजूर सैयदना अअ्ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरेलवी रह़मतुल्लाह तआ़ला अ़लैह की विलादते ब–सआ़दत 10 शव्वाल 1272 हिजरी मुताबिक़ 14 जून, 1856 ईसंवी को बरेली शरीफ़ में हुई। आपका इस्मे शरीफ़ (नाम) "मोह़म्मद" रखा गया। जद्दे अमजद (दादा) मौलाना रज़ा अ़ली ख़ाँ अलैहिर्रह़मा ने आपका नाम "अह़मद रज़ा" फ़रमाया। खुदावन्दे करीम ने आपको ग़ैर मामूली कुव्वत का मालिक बनाया था। चुनाँचे आपने सिर्फ़ चार साल की उम्र में कुरआने करीम ख़त्म कर लिया। छः साल की उम्र में ईद मीलादुन्नबी के मौक़े पर बहुत बड़े मजमे के सामने लगातार दो घण्टे तक़रीर फ़रमायी। आठ साल की उम्र में दरसी किताब 'हिदायतुलनह़व' की शरहे लिखी, जो आपकी सबसे पहली किताब है। दस साल की उम्र में दर्स की मशहूर किताब 'मुस्लिमुस्सुबूत' पर ह़ाशिया लिखा। शाबान 1286 हिजरी में, जबके आपकी उम्र सिर्फ़ 13 साल 10 माह 5 दिन थी, आपको दस्तारे फ़ज़ीलत से नवाज़ा गया। आप फ़रमाते हैं के जिस वक़्त मैं फ़ारिग़ हुवा (यानी मुकम्मल आ़लिम हुवा व दस्तारे फ़ज़ीलत से नवाज़ा गया) उसी

दिन मुझ पर नमाज़ फ़र्ज़ हुई तेरह साल की उम्र में ही एक अहम मस्ले का जवाब लिख कर वालिदे माजिद मौलाना नक़ी अ़ली ख़ाँ अलैहिर्रह्मा की ख़िदमत में पेश किया, जो बिल्कुल सही था। वालिद साहब ने उसी दिन से फ़तवा नवेसी का काम आपके सुपुर्द कर दिया।

1294 हिजरी में आपने मारहेरह शरीफ़ में सैयद आले रसूले अह्मदी रह्मतुल्लाह तआ़ला अ़लैह के मुबारक हाथों पर बैअ़त की और उनकी बारगाह से ख़िलाफ़त व इजाज़त के साथ–साथ सनदे ह़दीस से भी मुशर्रफ़ हुवे।

पीरो मुरशिद ह़ज़रत सैयद शाह आले रसूल रह़मतुल्लाह तआ़ला अ़लैह रह़मा फ़रमाया करते थे के "अगर क़यामत में ख़ुदाए तआ़ला ने सवाल फ़रमाया के ऐ आले रसूल तू दुनिया से क्या लाया ?तो मैं अह़मद रज़ा को पेश कर दूँगा।" सुबह़ानल्लाह ! ये कैसा मुरीद है, जिस पर उसके मुरशिद को भी नाज़ है।

आपने मुख़्तलिफ़ उ़लूम व फुनून में 1300 किताबें लिखीं, जो दुनिया की तक़रीबन 52 ज़बानों में हैं। ज़्यादातर किताबें अ़रबी व फ़ारसी में हैं। इन किताबों में "फ़तावा–ए–रज़विया" बहुत ही मशहूर व माअ़रूफ़ है, जिसकी बारह जिल्दे हैं और हर जिल्द तक़रीबन एक हज़ार पेज की है। इस तरह सिर्फ़ "फ़तावा–ए–रज़विया" 12000 पेज पर फैली हुई है। आपका

तरजुमा–ए–कुरआन "कन्जुल ईमान" उर्दू तरजुमों में सबसे बेहतर और सही तरजुमा है।

अअ्ला हज़रत को 55 उ़लूम व फुनून में महारत हासिल थी, जिनमें इल्में कुरआन, इल्मे हदीस, उसुले हदीस, उसुले फ़िक़ह, इल्मे तफ़सीर, इल्मे फ़लसफ़, इल्मे नहव, इल्मे हिन्दसा, इल्मे क़राएत, इल्मे तसव्वुफ़, इल्मे इसमाऊर रिजाल, इल्मे तकसीर, इल्मे तारीख़, इल्मे सुलूक, इल्मे जफ़र, इल्मे हया–ए–ते जदीदा, इल्मे मन्तिक, इल्मे लोग़ात, इल्मे ख़ते नस्ख़, इल्मे नस्र अ़रबी, फ़ारसी, हिन्दी वग़ैरह–वग़ैरह क़ाबिले ज़िक्र हैं। शायरी में भी आपने जो मुक़ाम पाया, उसकी मिसाल नहीं मिलती। "हदाएके बख़्शिश" के नाम से आपका नातिया दीवान मक़बूले ख़ास व आम है। "मुस्तफ़ा जाने रहमत पर लाखों सलाम" आपका ईमान अफ़रोज़ सलाम हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, ईराक़, बंगला देश, अफ़रीक़ा, सूडान, इण्डोनेशिया, हॉलेण्ड, बरतानिया, तुर्की, इंग्लेण्ड और मक्का व मदीना में बड़े ज़ौक़ व शौक़ के साथ ज़िक्रे रसूल की महफ़िलों में पढ़ा और सुना जाता है। अगर आपको क़लम का बादशाह कहा जाए तो ग़लत न होगा।

इल्म का दरया हुआ है मौजाज़न तहरीर में।
जब क़लम तू ने उठाया ऐ इमाम अहमद रज़ा।"

इन्हीं ख़ूबियों से मुतास्सिर होकर उ़लमा–ए–अ़रब व अ़जम ने बिल इत्तेफ़ाक़ आपको चौदहवीं सदी हिजरी का मुजद्दिदे आज़म तस्लीम किया।

1296 हिजरी में पहली मर्तबा हज किया और दूसरा हज 1323 हिजरी में किया और उसी मर्तबा "अद्दवलतुल मक्कीया" नामी किताब "इल्मे ग़ैब" से इन्कार करने वालों के रद में सिर्फ़ आठ घण्टे में लिखी। आपने आख़िर उम्र तक बदमज़हबों, बदअ़क़ीदा लोगों का रद फ़र्माया।

आपके मुताल्लिक़ जितना भी लिखा जाए, कम है। यहाँ जितना भी बयान किया गया, वह रेगिस्तान का एक ज़र्रा ही है। बस आप इससे ही अंदाज़ा लगाइए कि जब ज़र्रे का यह आलम है तो रेगिस्तान का आलम क्या होगा।

आपका विसाल 1340 हिजारी मुताबिक 1921 ईसवी को नमाज़े जुमा के वक़्त बरेली शरीफ़ में हुआ। आपका मज़ारे पुरअनवार आज भी बरेली शरीफ़ में मोहल्ला सौदागरान में अह़्ले ईमान की आँखों की ठण्डक, बेक़रारों का क़रार, बे आसरों का आसरा, ग़मज़दों का चैन, टूटे हुवे दिल का सहारा बना हुआ है।

"फ़ैज़ जारी रहेगा हश्र तक तेरा इमाम।
काम है वह कर दिखाया ऐ इमाम अहमद रज़ा!"

कुछ किताब के बारे में

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ रहमतुल्लाह तआला अलैह रहमा ने एक तरफ़ मआशरे (सोसायटी) की इस्लाह की ख़ातिर भरपूर जद्दोजहद की। मसलन तअज़ीयादारी, क़ब्रों को सजदा, क़व्वाली, क़ब्रों का तवाफ़, मज़ारात पर औरतों की हाज़री, बद आमाल पीरों की पीरी–मुरीदी वग़ैरह के ख़िलाफ़ इल्मी व क़ल्मी जिहाद फ़र्मा कर क़ौम की सही रहनुमाई की तो दूसरी तरफ़ एहले बिदअत, बदमज़हबों, बदअक़ीदों की धान्दलियों को रोकने के लिये भी आपने क़ल्मी जिहाद फ़र्माया।

"दौर बातिल और ज़लालत हिन्द में था जिस घड़ी!
तू मुजद्दिद बन के आया ऐ इमाम अहमद रज़ा!"

आला हज़रत के क़लम का एक अज़ीम शाहकार आपके हाथों में है। इसके मुताल्लिक़ बस इतना कह देना काफ़ी समझता हूँ के इस किताब "पुकारो या रसूलल्लाह" में आला हज़रत ने शरई हैसियत से क़तार–दर–क़तार दलीलों और सबूतों की रौशनी में यह साबित किया है कि मुसीबत के वक़्त अम्बीया–ए–इकराम, औलिया व बुज़ुर्गाने दीन को वसीला बनाना, उनसे मदद माँगना उन्हें निदा करना (पुकारना) और या रसूलल्लाह, या अली, या हसन, या हुसैन, या ग़ौस (या ग़रीब नवाज़) वग़ैरह कहना बेशक जाइज़ है। बल्कि यह इस्लाम का मुसल्लमा (महफ़ूज़) अक़ीदा है, जिस पर हर दौर में

सहाबा, ताबेईन, तबे ताबेईन, अइम्मा, उ़ल्मा व मशाइख़ का अ़मल रहा।

इस किताब का तर्जमा पेश करते हुए निहायत ख़ुशी महसूस कर रहा हूँ। जहाँ तक मुमकिन था तर्जमा को ह़र्फ़–ब–ह़र्फ़ करने की कोशिश की और जहाँ मुश्किल अलफ़ाज़ थे, उन्हें समझाने के लिए ब्रेकिट में कर दिया गया है, ताकि आला ह़ज़रत का अंदाज़े बयान बरक़रार रहे।

अफ़सोस! आज कल नाम नेहदा अपने मुँह मुसलमान होने का दावा करने वाले (जैसे वहाबी, देवबंदी, मौदूदी वग़ैरह) इस पर ज़ोर देते हैं कि ''या रसूलल्लाह'' कहना शिर्क है। लफ़्ज़ ''या'' से तो सिर्फ़ अल्लाह को ही पुकारना चाहिए और ''या रसूलल्लाह'' कहने वाले मुशरिक हैं, वग़ैरह–वग़ैरह। हालाँकि ये ह़ज़रात जिन उ़ल्मा को अपना दीनी पेशवा व बुज़ुर्ग मानते हैं, वोह ख़ुद तक़रीबन 150 सालों से खुद को मुसलमान साबित नहीं कर सके हैं। इस पर यहाँ ज़्यादा तबसेरह करना मुमकिन नहीं।

"थरथराए काँप उठे बाग़ियाने मुस्तफ़ा!
कहर बनके उनपे छाया ऐ इमाम अहमद रज़ा!"

किताब पढ़िये और ह़क़ व दयानत की रौशनी में खुद ही फ़ैसला कीजिए। अल्लाह तआ़ला मुसलमानों को समझने और अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़र्माए। – आमीन

' इस्तिफ्ता '

क्या फ़रमाते हैं उ़लमा–ए–दीन इस मस्अ़ले में के ज़ैद (एक शख़्स) ख़ुदा को एक मानने वाला, मुसलमान जो ख़ुदा और रसूल को जानता है। नमाज़ के बाद और दूसरे वक़्तों में रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैह व सल्लम को बकल्मा–ए– ''या'' निदा करता है (यानी लफ़्ज़ ''या'' से पुकारता है) और –

''अस्सलातो वस्सलामो अ़लैका ***या रसूलल्लाह***''

(तर्जमा – आप पर दरूद व सलाम हो ऐ अल्लाह के रसूल)

और

''अस अलुकश्शफ़ा अ़ता ***या रसूलल्लाह***''

(तर्जमा – ऐ अल्लाह के रसूल मैं आप से शफ़ाअ़त का सवाल करता हूँ)

कहा करता है। यह कहना जाइज़ है या नहीं ?जो लोग उसे (यानी ''या रसूलल्लाह'' कहने वाले शख़्स को) इस कल्मे की वजह से काफ़िर व मुशरिक कहें, उनका क्या हुक्म है ?

अलजवाब

सवाल में पूछे गये कल्मात (यानी ***“या रसूलल्लाह“*** कहेना) बेशक जाइज़ है। जिनके जाइज़ होने में बहस न करेगा मगर अह़मक़, जाहिल, या गुमराह, (और) गुमराह करने वाला, जिसे इस मस्अ़ले के मुताल्लिक़ ज़्यादा तफ़्सील से जानना हो वो...

1. शिफ़ाउस्सेकाम (इमामे अल्लाम बक़ीयतुल मुजतहेदीनिल किराम, तक़ीयुल मिल्लते वद्दीन)
2. मवाहेबे लदुन्निया (इमाम अह़मद कुसतलानी)
3. शारेह़ सही़ बुख़ारी व शरेह़ मवाहेब (अल्लामा ज़रक़ानी)
4. मतालेउ़ल मुस–र्रात (अल्लामा फ़ासी)
5. मिरकात शरहे़ मिश्कात (अल्लामा क़ारी)
6. अफ़ज़लुल कुरअ़ शरहे़ इमामुल कुरअ़ (इमाम इब्ने हजर मक्की)

वग़ैरह किताबों का और इन उ़लमा–ए–किराम व फुज़ला–ए–इज़ाम अहैहिम रह़मतुल्लाहुल अ़ज़ीम के कलाम

(बातों) का मुतालअ़ (अध्ययन) करें या फ़क़ीर का रिसाला ***"अल अहलाल बे फ़ैज़िल औलिया-ए-बादल विसाल"*** को पढ़ें।

यहाँ फ़क़ीर ज़रूरत के मुताबिक़ चन्द बातें मुख़्तसर लिखता है –

इमाम नसाई व इमाम तिर्मिज़ी व इब्ने माजा व ह़ाकिम व बयहक़ी व इमामुल अइम्मा इब्ने हुज़ेमा व अबुल क़ासिम तिबरानी ने ह़ज़रत उस्मान बिन हुनैफ़ रदीअल्लाहो तआ़ला अ़न्हो से रिवायत किया और (इस रिवायत को) "तिर्मिज़ी" ने ह़सन ग़रीब सही और तिबरानी व "बयहक़ी" ने सही और ह़ाकिम ने ***"बुख़ारी" "व "मुस्लिम"*** के हवाले से सही कहा और इमाम अ़ब्दुल अ़ज़ीम मनज़री वग़ैरह अइम्मा (इमामों) ने जो ह़दीसों की परख रखने वाले और ह़दीसों को झूट की मिलावट से पाक करने वाले हैं, ऐसे इमामों ने इस ह़दीस के सही होने को तसलीम किया व इसे बरक़रार रखा जिस मे हुज़ूरे अक़दस सैयदे आ़लम ने एक नाबीना (अन्धे शख़्स) को दुआ़ तालीम फ़रमाई कि बाद नमाज़ यूँ कहे

"इलाही मैं तुझसे माँगता और तेरी तरफ़ तवज्जह (उम्मीद) करता हूँ, तेरे रह़मत वाले नबी मुह़म्मद सल्लल्लाहो तआ़ला अलैह व सल्लम के वसीले से ***"या रसूलल्लाह"*** मैं हुज़ूर

के वसीले से अपने रब (तआ़ला) की तरफ़ इस ह़ाजत में तवज्जह करता हूँ के मेरी ह़ाजत पूरी हो। इलाही उनकी शफ़ाअ़त मेरे ह़क़ में कुबूल फ़रमा।

"इमाम तिबरानी" की मअजम में यूँ है –

यानी एक ह़ाजत मन्द अपनी ह़ाजत के लिये अमीरुल मोमेनीन उ़स्माने ग़नी रदीअल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की ख़िदमत में आता–जाता, (लेकिन) अमीरूल मोमेनीन उ़स्माने ग़नी न उसकी तरफ़ देखते न उसकी ह़ाजत पर नज़र फ़रमाते उसने ह़ज़रत उ़स्मान बिन हुनैफ़ रदीअल्लाहो तआ़ला अ़न्हो से इस बात की शिकायत की–उन्होंने फ़रमाया, वुज़ू करके मस्जिद में दो रकअ़त नमाज़ पढ़ फिर दुआ़ माँग "इलाही मैं तुझ से सवाल करता हूँ और तेरी तरफ़ अपने नबी मुह़म्मद सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैह व सल्लम के वसीले से तवज्जह (उम्मीद) करता हूँ ***"या रसूलल्लाह"*** मैं हुज़ूर के वसीले से अपने रब (अ़ज़्ज़ व जल) की तरफ़ मुतवज्जह होता हूँ के मेरी ह़ाजत पूरी फ़रमाईये"

अपनी ह़ाजत ज़िक्र करके फिर शाम को मेरे पास आना के मैं भी तेरे साथ चलूँ। ह़ाजतमन्द ने (के वह भी सह़ाबी या फिर कम–अज़–कम बड़े बुज़ुर्ग ताबईन से थे) यूँ ही किया फिर आस्ताने ख़िलाफ़त (यानी उ़स्माने ग़नी के मकान) पर ह़ाज़िर

हुए। दरबान आया और हाथ पकड़कर अमीरुल मोमीनीन के पास ले गया। अमीरुल मोमेनीन (उ़स्माने ग़नी) ने अपने साथ तख़्त पर बिठा लिया, मतलब पूछा, उन्होंने अपनी ह़ाजत बयान फ़रमाई। अमीरुल मोमेनीन ने पूरी फ़रमा दी और इरशाद फ़रमाया के "इतने दिनों में तुमने अपनी ह़ाजत बयान न किया। फिर फ़रमाया जो ह़ाजत तुम्हें पेश आया करें, हमारे पास चले आया करो।

यह साहब वहाँ से निकल कर **उस्मान बिन हुनैफ़** रदीअल्लाहो तअ़ाला अ़न्हो से मिले और कहा "अल्लाह तुम्हें जज़ाए ख़ैर दे– अमीरुल मोमेनीन मेरी ह़ाजत पर नज़र और मेरी तरफ़ तवज्जह न फ़रमाते थे, यहाँ तक के आपने उनसे मेरी सिफ़ारिश की। उस्मान बिन हुनैफ़ रदीअल्लाहो तअ़ाला अ़न्हो ने फ़रमाया – "ख़ुदा की क़सम मैंने तुम्हारे मामले में अमीरुल मोमेनीन से कुछ भी न कहा था, मगर हुआ यह कि मैंने **सैयदे आ़लम** सल्लल्लाहो तअ़ाला अलैह व सल्लम को देखा, हुज़ूर की ख़िदमत में एक नाबीना (अंधे शख़्स) ह़ाज़िर हुवे और नाबीना होने की शिकायत की। हुज़ूर ने यूँ ही उनसे इरशाद फ़रमाया के वुज़ू करके दो रकअ़त नमाज़ पढ़े फिर यह दुआ़ करे। ख़ुदा की क़सम हम उठने भी न पाए थे, बातें ही कर रहे थे, कि वह हमारे पास आ गए – जैसे कभी अंधे न थे।"

इमाम तिबरानी, फिर इमाम मन्ज़री फ़रमाते हैं – "यह हदीस सही है"।

इमाम बुख़ारी किताबुल अदब अल मुफ़रिद में और इमाम इबनुस सुन्नी और इमाम इब्ने बश्कुवाल, रिवायत करते हैं — यानी हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रदीअल्लाहो तआला अन्हुमा का पाँव सुन हो गया। किसी ने कहा उन्हें याद कीजिए जो आपको सबसे ज़्यादा मेहबूब हैं। हज़रत ने ब–आवाज़े बुलन्द कहा "या मुहम्मदाह"। फ़ौरन पाँव अच्छा हो गया।

इमाम नववी "शारेह सही मुस्लिम" रहमतुल्लाह अलैह ने "किताबुल अज़कार" में इसी तरह का वाक़िया, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदीअल्लाहो तआला अन्हुमा से नक़्ल फ़रमाया –कि

"उनका पाँव सोया (सुन हो गया) तो "या मुहम्मदाह" कहा, अच्छा हो गया।"

और इस तरह का वाक़िया इन दोनों सहाबियों के सिवा औरों से भी मरवी (रिवायत) हुआ है।

एहले मदीना में बहुत पहले से इस "या मुहम्मदाह" कहने की आदत चली आती है।

अल्लामा शहाबुद्दीन मिस्री, "नसीमुल रियाज़ शरहे शिफ़ा–ए–इमाम क़ाज़ी अयाज़" में फ़रमाते हैं —

"या मुहम्मदाह" कहना मदीने में रहने वालों का मामूल (रोज़ाना का अ़मल) था।

ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी के बाद सन् 18 हिजरी में वाक़्अे हुआ कि हज़रत बिलाल बिन हारिस मज़नी से, क़हत (अकाल, सूखा) 'आमुर रमादह' में, उनकी क़ौम 'बनी मज़निया' ने गुज़ारिश कि के (हम) मरे जाते हैं कोई बकरी ज़िबह कीजिए, फ़रमाया बकरियों में कुछ नहीं रहा है, क़ौम ने इसरार किया आख़िर ज़ुबह की खाल खींची तो सिर्फ़ लाल हड्डी निकली देखकर हज़रत बिलाल बिन हारिस रदीअल्लाहो तआ़ला अ़न्हो ने निदा कि –"या मुहम्मदाह"फिर हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैह व सल्लम ने ख़्वाब में तशरीफ़ लाकर बशारत दी कि सूखा जल्द ही ख़त्म होने वाला है। (तारीख़ कामिल मुसन्निफ़ इब्ने असीर जिल्द 2 सफ़ा 556)

इमामे मुजतहेद फ़क़ीहे अजल अ़ब्दुल रहमान हुज़ाली, कूफ़ी, मसऊ़दी के हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रदीअल्लाहो तआ़ला अ़न्हो के पोते और अजलल–ए–तबे–ताबईन(यानी बहुत जलीलुलक़द्र तबे–ताबईन) व अकाबिरे अइम्माए मुजतहेदीन (पहले के बड़े बुज़ुर्ग इमामों) से हैं। सर पर बुलन्द (लम्बी)टोपी रखते, जिसमें लिखा था "मुहम्मद या मन्सूर"

हुशैम बिन जमील अनताकी, के सच्चे भरोसेमंद उ़लमा–ए–मुह़द्देसीन से है इन्हीं इमामे अजल (यानी इमाम अ़ब्दुल रह़मान हुज़ली कूफ़ी मसऊ़दी) के बारे में फ़रमाते हैं –

"मैंने उन्हें इस हाल में देखा के उनके सर पर गज़ भर की लम्बी टोपी थी, जिसमें लिखा था मुहम्मद या मन्सूर", जिसको 'तहज़ीबित तहज़ीब' वग़ैरह ने ज़िक्र किया है।

इमाम शैख़ुल इस्लाम शहाबुद्दीन रूमली अन्सारी के फ़तावा में है यानी उन से फ़तवा पूछा गया के आम लोग जो सख़्तियों के वक़्त अम्बिया (नबियों) व मुरसलीन (रसूलों) और औलिया व सॉलेह़ीन (नेक लोगों) से फ़रयाद करते हैं और "या रसूलल्लाह", "या अ़ली", "या शेख़ अ़ब्दुल क़ादर जीलानी" और इस तरह के दूसरे कलमात कहते हैं, यह जाइज़ है या नहीं ?और औलिया इन्तेक़ाल के बाद भी मदद फ़रमाते हैं या नहीं ?

उन्होंने जवाब दिया "बेशक अम्बिया व मुरसलीन और औलिया व उ़लमा से मदद माँगनी जाइज़ है और वह इन्तेक़ाल बाद भी मदद फ़रमाते हैं।

अल्लामा ख़ैरुद्दीन रूमली उस्ताज़ साहबे "दुर्रे मुख़्तार" "फ़तावा–ए–ख़ैरयाह" में फ़रमाते हैं –

लोगों का कहना है कि या शेख़ अ़ब्दुल क़ादिर यह एक निदा (मदद के वक़्ता का नारा) है फिर इसकी हुरमत (मना होने) का

क्या सबब (कारण) है ?

सैयदी जमाल बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ऊमर मक्की अपने फ़तावा में फ़रमाते हैं –

यानी मुझसे सवाल हुआ उस शख़्स के बारे में जो मुसीबत के वक़्त कहता है "या रसूलल्लाह, या अ़ली, या शेख़ अ़ब्दुल क़ादिर और इस तरह के दूसरे कलमात, क्या यह शरीअ़त में जाइज़ है या नहीं ?

मैंने जवाब दिया हाँ औलिया से मदद माँगना और उन्हें मुसीबत के वक़्त पुकाराना और उनका वसीला चाहना शरीअ़त में जाइज़ और पसंदीदा चीज़ है, जिसका इन्कार न करेगा, मगर हटधर्म या औलिया अल्लाह से दुश्मनी रखने वाला और बेशक वह औलिया इकराम की बरकत से महरूम है।

इमाम इब्ने जवज़ी ने किताब "उयूनुल हिकायत" में तीन औलिया–ए–इज़्ज़ाम का अ़ज़ीमुश्शान वाक़िया लगातार बहुत से सबूतों से रिवायत किया, कि –

वह तीन भाई घोड़ों पर सवार रहने वाले "मुल्के शाम" में रहते थे। हमेशा राहे ख़ुदा में जिहाद करते थे।

यानी एक बार मुल्के रूम के ईसाई उन्हें क़ैद करके ले गये।

बादशाह ने कहा के मैं तुम्हें सल्तनत दूँगा और अपनी बेटियाँ ब्याह दूँगा, तुम ईसाई हो जाओ। उन्होंने न माना और निदा की (पुकारा) "या मुहम्मदाह"

बादशाह ने तेल गरम करा कर दो भाईयों को उसमें डाल दिया। तीसरे को अल्लाह तआ़ला ने एक सबब पैदा फ़रमा कर बचा लिया। वोह दोनों छः महीने के बाद फ़रिश्तों की एक जमाअ़त के साथ बेदारी में उनके पास आए और फ़रमाया "अल्लाह तआ़ला ने हमें तुम्हारी शादी में शरीक होने के लिये भेजा है।"

उन्होंने हाल पूछा -- फ़रमाया –

"बस वही तेल का एक ग़ोता (डुबकी) थी, जो तुमने देखा, उसके बाद हम जन्नतुल फ़िरदोस में थे।"

इमाम जवज़ी फ़रमाते हैं –

यह हज़रात (यानी ये तीनों भाई) ज़माने सलफ़ (पहले के ज़माने) में "शाम" में मशहूर थे और उनका यह वाक़िया बहुत मशहूर है।

फिर फ़रमाया — शाइरों ने उनकी शान व तारीफ़ में क़सीदे लिखे। उन तमाम क़सीदों में से एक शेर इस ख़याल से कि बात लम्बी न हो, मुख़्तसरन ज़िक्र फ़रमाया –

(तरजमा – क़रीब है के अल्लाह तआ़ला सच्चे ईमान वालों को

उनके सच की बरकत से ह़यात व मौत में निजात बख़्शेगा)

यह वाक़िआ अ़जीब, नफ़ीस व रूह को ताज़गी देने वाला है। मैं इसे इस ख़याल से कि किताब का मज़मून बढ़ जाएगा, मुख़तसर कर गया। पूरा वाक़िआ इमाम जलालुद्दीन सुयूती की किताब ''शरहुस्सूदूर'' में है।

यहाँ मक़सद इस क़दर है कि मुसीबत में ''या रसूलल्लाह'' कहना अगर शिर्क है तो मुशरिक की मग़फ़ेरत व शहादत कैसी ? और जन्तुल फ़िरदोस में जगह पाना क्या माअ़नी और उनकी शादी में फ़रिश्तों को भेजना क्यों कर अक़्ल में आने वाला, और उन अइम्मा–ए–दीन ने यह रिवायत क्यों कर क़बूल की और उन (तीनों भाईयों) की शहादत व विलायत (वली होना) किस वजह से तस्लीम किया और वह मर्दाने ख़ुदा, ख़ुद भी अव्वल वक़्त के नेक बुज़ुर्गों में से थे कि यह वाक़िआ ''तरतूसर'' की आबादी से पहले का है।

जैसा कि रिवायत में लिखा है।

और तरतूस में एक शहर है यानी दारुल इस्लाम की सरहद का शहर, जिसे ख़लीफ़ा हारून रशीद रह़मतुल्लाह तआ़ला अ़लैह ने आबाद किया –

जैसा कि इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने ''तारीख़ुल ख़ुलफ़ा''

में इसका ज़िक्र किया है।

हारून रशीद का ज़माना ताबेईन व तबे–ताबेईन का था तो यह तीनों शोहदा–ए–किराम अगर ताबई न थे तो कम–अज़–कम तबे–ताबेईन में से थे। (अल्लाह ही हिदायत फ़रमाने वाला है)

हुज़ूर सैयदना ग़ौसे आअ्ज़म रदीयल्लाहो तआ़ला अ़न्हो फ़रमाते हैं –

यानी जो किसी तकलीफ़ में मुझसे फ़र्याद करे वह तकलीफ़ ख़त्म हो और जो किसी परेशानी में मेरा नाम लेकर निदा करे (यानी मुझे पुकारे) वह परेशानी दूर हो और जो किसी हाजत में अल्लाह की तरफ़ मेरा वसीला पेश करे वह हाजत पूरी हो जाए– और जो दो रकअ़त नमाज़ अ़दा करे, हर रकअ़त में सूरह फ़ातेहा के बाद सूरह इख़्लास ग्यारह बार पढ़े फिर सलाम फेर कर नबी सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैह व सल्लम पर दुरूद शरीफ़ व सलाम भेजे, फिर इराक़ शरीफ़ की तरफ़ ग्यारह क़दम चले, उनमें मेरा नाम लेता जाए और अपनी हाजत याद करे, उसकी वह हाजत पूरी हो अल्लाह के हुक्म से।

अकाबिर उ़लमा–ए–किराम व औलिया–ए– उ़ज़्ज़ाम जैसे इमाम अबुल हसन नूरुद्दीन अ़ली बिन जरीर लख़मी शतनूफ़ी व इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन असअ़द याफ़ई मक्की, मौला अ़ली क़ारी मक्की साहिबे (लेखक) "मिरक़ात शरह मिश्कात" व

मौलाना अ़बुल मआ़ली मुहम्मद मुसलमी क़ादरी व शेख़ मोहक़्क़िक़ मौलाना अ़ब्दुल हक़ मोहद्दिस दहलवी वग़ैरह हम रह़मतुल्लाह अ़लैहिम अपनी किताबों में जैसे – 'बहजतुल असरार' व 'ख़ुलासतुल मुफ़ाख़िर' व 'नज़हतुल ख़ातिर' व तोह़फ़–ए–क़ादरिया व 'ज़ुबदतुल आसार' वग़ैरह में ये कलमाते रह़मत हुज़ूर ग़ौसे पाक रदियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो से नक़्ल व रिवायत करते हैं।

यह इमाम अ़बुल हसन नूरुद्दीन अ़ली, मुसन्निफ़ 'बहजतुल असरार' शरीफ़ (के) बड़े–बड़े उ़लमा व अइम्मा (इमामों) के उस्ताद और औलिया–ए–किराम में बुज़ुर्ग व सादाते तरीक़त से हैं। हुज़ूर ग़ौसुस सक़लैन रदियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो तक सिर्फ़ दो वास्ते रखते हैं। यानी इमामे अजल ह़ज़रत अबू सालेह़ नस्र कुद्देसिर्रहू से फ़ैज़ ह़ासिल किया। उन्होंने अपने वालिदे माजिद ह़ज़रत अबू बक्र ताजुद्दीन अ़ब्दुल रज़ाक़ नूरूल्लाह मरकदहू से, उन्होंने अपने वालिदे माजिक हुज़ूर पुरनूर सैयदों के सरदार ग़ौसे अअ़ज़म रदियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो से शेख़ मोहक़्क़िक़ हज़रत शाह अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रह़मतुल्लाह तआ़ला अ़लैह ''ज़ुबदतुल आसार'' शरीफ़ में फ़रमाते हैं –

यह किताब ''बहजतुल असरार'' किताबे अ़ज़ीम व शरीफ़

मशहूर है और इसके मुसन्निफ़ हज़रत इमाम अबुल हसन उलमा के उस्तादो से आलिम मअ़रूफ़ व मशहूर (है) और उनकी ज़िन्दगी के ह़ालते शरीफ़ा किताबों में मौजूद और लिखे हुए हैं।

इमाम शमसुद्दीन ज़ैहवी के इल्मे ह़दीस व (इल्मे) 'इस्माउर रिजाल' में जिनकी जलालते शान सारी दुनिया में खुली हुई ज़ाहिर है, इस जनाब (यानी इमाम अ़बुल ह़सन) की मजालिस में हाज़िर हुए और अपनी किताब 'तबकातुल मुक़र्रीन' में उनकी बहुत तारीफ़ें लिखीं।

इमाम मुह़द्दिस मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन जज़री, मुसन्निफ़ 'ह़िस्ने ह़सीन' उनके शागिर्द में हैं, उन्होंने (यानी इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन जज़री) ने यह किताब 'बहजुल असरार' शरीफ़ अपने शेख़ इमाम शमसुद्दीन से पढ़ी और उसकी सनद व इजाज़त ह़ासिल की।

इन सब बातों की तफ़सील और इस मुबारक नमाज़ की शरई दलीलें और बातें व उ़लमा व औलिया का इस पर अ़मल व सबूत फ़क़ीर के रिसाले (किताब) 'अनहारुल अनवार मिन यम सलातिल असरार' में है।

तर्जुमा – "तुम पर उसका पढ़ना ज़रूरी है उसमें ऐसी बातें पाओगे जो सीने को रौशन कर देगी और जहालत दूर हो

जाएगी और सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जो मालिक सारे जहान वलों का।"

इमाम आरिफ़ बिल्लाह सैयदी अब्दुल वहाब शीरानी कुद्देसिर्रहू रब्बानी, मशहूर किताब 'लेवाकेउल अनवार फ़ी तबकातुल अख़्यार' में फ़रमाते हैं –

'सैयद मुहम्मद गमरी रदियल्लाहो तआला अन्हो के एक मुरीद बाज़ार में तशरीफ़ ले जाते थे, उनके जानवर का पाँव फिसला, ब–आवाज़े बुलन्द पुकारा या सैयदी मुहम्मद गमरी !

उधर इब्ने उमर हाकिमे सईद को सुल्तान चकमक के हुक्म से क़ैद किये लिये जाते थे, इब्ने उमर ने फ़क़ीर (यानी सैयद मुहम्मद गमरी के मुरीद) का बुलन्द आवाज़ से पुकारना सुना – पूछा यह सैयदी मुहम्मद कौन हैं ?कहा – मेरे शेख़ हैं ! कहा मैं (इब्ने उमर) ज़लील भी कहता हूँ – "या सैयदी मुहम्मद या ग़मरी ला हफ़िज़्नी", ऐ मेरे सरदार ऐ मुहम्मद ग़मरी मुझ पर नज़रे इनायत करो ! उनका यह कहना था के हज़रत सैयदी मुहम्मद ग़मरी रदियल्लाहो तआला अन्हो तशरीफ़ लाए और मदद फ़रमाई के बादशाह और उसके लशकरियों की जान पर बन आई। मजबूरन इब्ने उमर को ख़िलअत दे कर रुख़्सत किया।

उसी में यानी इमाम सैयदी अ़ब्दुल वहाब शीरानी की किताब 'लेवाकेउल अनवार फ़ी तब्कातुल अख़्यार'' में है ––

सैयदी शमसुद्दीन मुहम्मद हनफ़ी रदियल्लाहो तआ़ला अन्हो अपने कमरे में वुज़ू फ़रमा रहे थे। अचानक एक खड़ाओं (लकड़ी के चप्पल) हवा पर फैंकी के ग़ायब हो गई। हालाँके कमरे में कोई रास्ता खड़ाओं के जाने का न था। दूसरी खड़ाओं अपने ख़ादिम को अ़ता फ़रमाई के इसे अपने पास रहने दे, जब तक वह पहली वापस आए।

एक मुद्दत के बाद के 'मुल्के शाम' से एक शख़्स वह खड़ाओं और तोहफ़ों के साथ वापस लाया और अ़र्ज़ की ''अल्लाह तआ़ला हज़रत को जज़ाए ख़ैर दे, जब चोर मेरे सीने पर मुझे क़त्ल करने बैठा, मैंने अपने दिल में कहा या सैयदी मुहम्मद या हनफ़ी, उसी वक़्त यह खड़ाओं ग़ैब से आकर उसके सीने पर लगी और वह चक्कर खाकर उल्टा हो गया और मुझे हज़रत की बरकत से अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल ने निजात बख़्शी।''

उसी किताब में है वली–ए–मम्दूह (यानी हज़रत सैयदी शमसुद्दीन मुहम्मद हनफ़ी रदियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो की पाक बीवी, बीमारी से मौत के क़रीब हो गईं, वह यूँ पुकारा करती थीं –

या सैयदी (ऐ मेरे सरदार) ऐ अहमद बदवी हज़रत की

तवज्जह मेरे साथ है।

एक दिन हज़रत सैयदी अहमद कबीर बदवी रदियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो को ख़्वाब में देखा, के फ़रमाते हैं –

"कब तक मुझे पुकारेगी और मुझसे फ़र्याद करेगी ! तू जानती नहीं तू (ख़ुद तो) एक बड़े साहेबे तमकीन (यानी अपने शोहर) की हिमायत में है और जो किसी बड़े वली की दरगाह में होता है, हम उसकी निदा (आवाज़ देने) पर जवाब नहीं देते। यूँ कहें "या सैयदी मुहम्मद या हनफ़ी" ! यह कहेगी तो अल्लाह तआ़ला तुझे सहत बख़्शेगा। उन बीवी ने यूँ ही कहा, सुबह को ख़ासी तन्दुरुस्त उठीं जैसे कभी मरज़ न था।

उसी किताब में है –

हज़रत मम्दूह रदियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो मर्ज़े मौत में फ़रमाते थे –

"जिसे कोई हाजत हो वह मेरी कब्र पर हाज़िर होकर हाजत माँगे, मैं पूरी फ़रमा दूँगा, के मुझमें तुममें यही हाथ भर मिट्टी ही तो आड़ है और जिस वली को इतनी मिट्टी अपने चाहने वालों से हिजाब (परदे) में कर दे वह वली काहे का ?"

इसी तरह हज़रत सैयदी मुहम्मद बिन अहमद फ़रग़ुल रदियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो के हालाते शरीफ़ा में लिखा है –

फ़रमाया करते थे मैं उनमें हूँ जो अपनी कब्र में तसर्रुफ़ (मदद) फ़रमाते हैं। जिसे कोई ह़ाजत हो मेरे पास चेहरए मुबारक के सामने ह़ाज़िर होकर मुझसे अपनी ह़ाजत कहे, मैं पूरी फ़रमा दूँगा।

उसी में है –

रिवायत है, के एक बार हज़रत सैयदी मदयन बिन अह़मद अशमूनी रदियल्लाहो तआ़ला अ़न्हो, ने वुज़ू फ़रमाते में एक खड़ाओं पूर्व दिशा के शहरों की तरफ़ फैंकी। साल भर के बाद एक शख़्स ह़ाज़िर हुआ और वह खड़ाओं उनके पास थी। उन्होंने ह़ाल अ़र्ज़ किया के जंगल में एक बदमाश ने उनकी साहबज़ादी की इज़्ज़त पर हाथ डालना चाहा, लड़की को उस वक़्त अपने बाप के पीरो मुरशिद ह़ज़रत सैयदी मदयन का नाम मालूम न था, यूँ निदा कि या शेख़ अबिल हफ़िज़नी। (ऐ मेरे बाप के पीर मुझे बचाइये) यह निदा करते ही वह खड़ाओं आई और लड़की ने निजात पाई। वह खड़ाओं उनकी औलादों में अब तक मौजूद है।

उसी में सैयदी मूसा अबू इमरान रह़मतुल्लाह तआ़ला अ़लैह के ज़िक्र में लिखते हैं –

जब उनका मुरीद जहाँ कहीं से निदा (पुकारा) करता, जवाब देते अगर–चे साल भर की राह पर होता या उससे भी ज़्यादा।

हज़रत शेख़ मुहक़्क़िक़ मौलाना अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी, "अख़बारुल अख़यार" शरीफ़ में शेख़ हज़रत सैयद अजल शेख़ बहाउल हक़ वद्दीन बिन इब्राहीम व अता उल्लाहुल अन्सारी क़ादरी शतारी हुसैनी रदियल्लाहो तआ़ला अन्हो, के ज़िक्रे मुबारक में हज़रते मम्हूद के रिसालाए मुबारका "शत्तारिया" से नक़्ल फ़रमाते हैं –

कश्फ़े अरवाह, यानी नेक रूहों से मुलाक़ात करने के लिए, "या अहमद या मुहम्मद" के ज़िक्र के दो तरीक़े हैं – एक तरीक़ा यह है कि – "या अहमद" दाएँ तरफ़ कहे और "या मुहम्मद" बाएँ तरफ़ और दिल में "या रसूलल्लाह" की ज़र्ब लगाएँ।

दूसरा तरीक़ा यह है कि "या अहमद" दाएँ तरफ़ और "या मुहम्मद" बाएँ तरफ़ कहे और दिंल में "या मुस्तफ़ा" कहे।

दूसरा ज़िक्र यह है के "या अहमद, या मुहम्मद, या अली, या हसन, या हुसैन, या फ़ातेमा" का ज़िक्र छः जानिब करे, तमाम रूहों से मुलाक़ात हो जाएगी।

दूसरे मुक़र्रब फ़रिश्तों के नाम भी तासीर रखते हैं। या जिबरईल, या मीकाइल, या इस्राफ़ील, या इज़राईल की चार ज़र्ब लगाएँ। ज़िक्रे शेख़ भी करें – या शेख़, या शेख़, इस तरह अदा करें कि हुर्फ़े निदा दिल से खींचें (यानी शब्द

"या" दिल से पुकारें) शेख़ के दोनों लफ़्ज़ों की दिल में ज़र्ब लगाएँ।

हज़रत सैयदी नूरुद्दीन अब्दुल रहमान जामी, कुद्दसिर्रूह हुस्सामी "नफ़हातुल उन्स" शरीफ़ में हज़रत मौलवी मअ्नवी कुद्दसिर्रूहु अ़ली के हालात में लिखते हैं के मौलाना रूहुल्लाह रूह (यानी हज़रत मौलवी मअ्नवी) ने क़रीबे इन्तेक़ाल इर्शाद फ़रमाया –

मेरी वफ़ात से ग़मगीन न होना क्योंकि "नूर मन्सूर रहमतुल्लाह तआ़ला अ़लैह ने 150 साल के बाद शेख़ फ़रीदुद्दीन अ़त्तार रहमतुल्लाह तआ़ला अ़लैह की रूह पर तजल्ली फ़रमाई –

और फ़रमाया के तुम हर हालत में मुझे पुकारो ताके मैं तुम्हारे लिये जिस लिबास में हूँ हाज़िर हो जाऊँ।

शाह वली अल्लाह साहब देहलवी अपनी किताब (अतैयबुल नग़म फ़ी मदहे सैयदुल अरबोबल अ़जम) में लिखते हैं और ख़ुद उसकी शरहे (ख़ुलासा) और तर्जुमा में कहते हैं –

आँ हज़रत सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैह व सल्लम की बारगाहे आ़ली में गिड़गिड़ा कर दुआ़ करता हूँ के ऐ मख़लूक़े ख़ुदा सबसे अफ़ज़ल व बेहतर तुझ पर रहमते ख़ुदावंदी नाज़िल हो – ऐ अफ़ज़ल व अकमल जो शख़्स तुझसे किसी चीज़ की उम्मीद

रखता है तो तू अ़ता करता है – ऐ मख़लूक़ में सबसे आ़ला व बाला जो शख़्स तुझसे मुसीबतों से निजात की उम्मीद रख़ता है, तू उसकी मुसीबतों को ख़त्म करता है – ऐ मख़लूक़ में सबसे बरतर जो शख़्स के तुझसे सख़ावत की उम्मीद रखता है, तो सख़ावत के बादल गवाही देते हैं, तू मुसीबतों के हुजूम से निजात देना, जिस वक़्त के बद–तरीन लोग दिल में मुसीबतों के काँटे चुभोते हैं।

इस (दुआ़) के शुरू में लिखते हैं –

कुछ ऐसे ज़माने के ह़ादसात हैं के इसमें ह़ादसात ज़रूरी हैं। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैह व सल्लम की रूह से मदद माँगने से (वह) ख़त्म हो जाते हैं।

शाह वली अल्लाह साहब ''मदहय्य हमज़य्य'' में लिखते हैं और ख़ुद ही इसकी शरह़ और तर्जुमा में कहते हैं –

रो–रो कर इन्केसारी, इल्तेजा व इख़लास और ख़ुशू व ख़ुज़ू (यानी दिल की गहराई) से नबिये करीम सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैह व सल्लम को पुकारे ''ए रसूले ख़ुदा, ऐ बहतरीने मख़्लूक़ात हम क़यामत के दिन तेरी अ़ता चाहते हैं। जिस वक़्त मुशकिलात, बलाएँ घेरे हों, तेरी पनाह में रहूँ।

मैं तेरी पनाह चाहता हूँ और तुझी से उम्मीदें वाबस्ता रखता

हूँ।यही शाह वली अल्लाह साहब "इन्तेबाह फ़ी–सलासिले औलिया अल्लाह" में हाजत के वक़्त मदद माँगने के लिए एक वज़ीफ़ा की तरकीब यूँ नक़्ल करते हैं –

पहले दो रकअ़त नफ़िल अ़दा करे उसके बाद 111 बार दुरूद शरीफ़ पढ़े, उसके बाद 111 बार कलमए तमजीद और 111 बार "शय अन लिल्लाहे या शेख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी" (तर्जुमा – अल्लाह के वास्ते मेरी मदद करो ऐ शेख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी)

इसी "इन्तेबाह" से साबित के यही शाह साहब और उनके शेख़ व इल्मे हदीस के उस्ताद मौलाना ताहिर मदनी, जिनकी ख़िदमत में मुद्दतों रह कर शाह साहब ने हदीस पढ़ी और उनके उस्ताद व शेख़ और वालिद मौलाना इब्राहीम करवी और उनके उस्ताद मौलाना कशाशी और उनके उस्ताद मौलाना अहमद शनावी और शाह साहब के उस्तादों के उस्ताद मौलाना अहमद नख़ली, के यह चारों हज़रात शाह साहब के हदीस के सिलसिलों के रावी हैं। और शाह साहब के पीरों मुरशिद शेख़ मुहमद सईद लाहोरी, जिन्हें (शाह साहब ने) 'इनतेबाह' में शेख़े मुअ़त्तर (भरोसे के क़ाबिल) सच्चा कहा और सरदारे मशाएख़े तरीक़त से गिना, और उनके पीर शेख़ हज़रत मुहम्मद अशरफ़ लाहोरी और उनके शेख़ मौलाना अ़ब्दुल मलिक और उनके

मुरशिद शेख़ बा–यज़ीद सानी और शेख़ शनावी के पीर हज़रत सैयद सबग़तुल्लाह बरूजी, और उन दोनों साहबों के पीरो मुरशिद मौलाना वजीहउद्दीन अ़लवी, "शारहे हिदाया व शरहे विक़ाया" और उनके शेख़ हज़रत शाह मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी अ़लैहिम रह़मतल बारी, यह सब अकाबिर (बुज़ुर्ग) नादे अ़ली की सनदें (सुबूत) लेते और अपने शागिर्दों मुहब्बत करने वालों को इजाज़तें देते और या अ़ली–या अ़ली का वज़ीफ़ा करते।

जिसे इसकी तफ़सील देखनी हो वह फ़क़ीर की किताब 'अनहारुल अनवार' और 'ह़यातुल मवात फ़ी बयाने समाइल अम्वात' को पढ़े।

शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ साहब ने 'बुस्तानुल मुहद्देसीन' में हज़रत अरफ़अ़ व अअ़्ला इमामुल उ़लमा निज़ामुल औलिया हज़रत सैयदी अहमद ज़र्रुक़ मग़रबी कुद्देसिर्रहू उस्ताद इमाम शमसुद्दीन लिकानी और इमाम शहाबुद्दीन कुस्तलानी शारेह़ हदीस 'सही बुख़ारी' की बहुत बढ़–चढ़ कर ख़ूब तारीफ़े लिखीं के 'वह जनाब सात अब्दालों व मोहक़्क़ेक़ीन सूफ़िया में से हैं। शरीअ़त व हक़ीक़त के जामेअ़ बयान के मुताबिक़ उनकी वह किताबें जो बातनी (छुपे हुए) इल्मों के बारे में है, वह किताबें इल्मे ज़ाहीरी में भी फ़ायदा पहुँचाने वाली और

बहुत मुफ़ीद है। यहाँ तक लिखा –

(तर्जुमा – यानी सारी बातों का ह़ासिल यह है कि वह ऐसे बड़े मरतबे वाली शख़्सीयत है के उनका मरतबा व कमाल बयान से बहुत ऊँचा है।)

फिर इस जनाबे जलालत मआ़ब (यानी सैयदी अह़मद ज़र्रुक़ मग़रबी) के कलामे पाक से दो शेर नक़्ल किये के फ़रमाते हैं

(तर्जुमा – यानी मैं अपने मुरीद की परेशानियों में इत्मीनान बख़्शने वाला हूँ जब ज़माने के सितम अपनी नहूसत उस पर डालें। और अगर तू तंगी व तकलीफ़ व डर में हो तो यूँ पुकार "या ज़र्रुक़" मैं फ़ौरन मदद के लिए आऊँगा !

अल्लामा ज़ियादी, फिर अल्लामा अजहूरी, जो बहुत सारी किताबों के लेखक हैं, जो मशहूर हैं। फिर अल्लामा दाऊदी मेहशरी 'शरहे नहेज' फिर अल्लामा शामी साह़िबे (लेखक) 'रद्दुल मोहतार हाशिया दुर्रे मुख़्तार' गुमशुदा चीज़ मिलने के लिए फ़रमाते हैं, के –

"बुलन्दी पर जाकर हज़रत सैयदी अह़मद बिन अलवान यमनी, कुद्देसिर्रुहू के लिए फ़ातेहा पढ़ें फिर उन्हें पुकारें या सैयदी अह़मद या इब्ने अलवान"

मशहूर किताब 'शामी' से फ़क़ीर ने उसके हाशिये की इबारत

अपनी किताब 'हयातुल मुवात —' के हाशियों के ख़त्म होने पर ज़िक्र की।

ग़र्ज़ यह सहाब–ए–इकराम से इस वक़्त तक के इस क़दर अइम्मा, व औलिया व उ़लमा हैं, जिनकी बातें फ़क़ीर ने एक छोटे से वक़्त में जमा कीं।

अब मुशरिक कहने वालों से साफ़ पूछा जाए के उ़स्मान बिन हुनैफ़ व अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास, अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर, सहाबा इकराम रदीयल्लाहो अ़न्हुम से लेकर शाह वली अल्लाह, व शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ साहब और उनके उस्ताद व मशाइख़ तक सबको काफ़िर मुशरिक कहते हो या नहीं ? अगर इन्कार करें तो अल्हम्दो लिल्लाह हिदायत पाई और हक़ ज़ाहिर हो गया।

और बेधड़क उन सब पर कुफ्र का फ़तवा जारी करें तो उनसे इतना कहिए के अल्लाह तुम्हें हिदायत करे। ज़रा आँखें खोल कर देखो तो किसे कहाँ और क्या कुछ कहा।

और दिल में जान लीजिए कि जिस मज़हब की बिना पर सहाबा से लेकर अब तक के बुज़ुर्गाने दीन सब मआ़ज़ अल्लाह मुशरिक व काफ़िर ठहरे, वह मज़हब ख़ुदा व रसूल को किस क़दर दुश्मन होगा।

सही ह़दीसों में आया है के जो किसी मुसलमान को काफ़िर कहे, वह ख़ुद काफ़िर है और बहुत से अइम्माए दीन (इमामों) ने मुतलकन इस पर फ़तवा दिया (याने साफ़ काफ़िर कहा) जिसकी तफ़सील फ़क़ीर ने अपनी किताब 'अन्नहियुल अकीद अ़निस्सलाते वरा–ए–अदित्तक़लीद' में ज़िक्र की। हम अगर चे एहतियात के तौर पर काफ़िर न कहेंगे, लेकिन इसमें शक नहीं के अइम्मा की एक जमअ़ात के नज़दीक यह ह़ज़रात के या रसूल अल्लाह, या अ़ली, या हुसैन, या ग़ौसुस्सक़लैन कहने वाले मुसलमान को काफ़िर व मुशरिक कहते हैं, ख़ुद काफ़िर हैं, तो उन पर ज़रूरी है के नए सिरे से कल्मा–ए–इस्लाम पढ़ें और अपनी औरतों से नया निकाह़ करें।

दुर्रे मुख़तार में है –

जिसमें इख़तेलाफ़ हो उसमें अस्तग़फ़ार, तौबा और नये निकाह़ का हुक्म दिया जाता है।

फ़ायेदा - हुज़ूर सैयदे आ़लम सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैह व सल्लम को निदा (पुकारना) की उ़म्दह (बेहतरीन) दलीलों में से 'अत्तहिय्यात' है, जिसे हर नमाज़ी नमाज़ की दो रकअ़त पर पढ़ता है और अपने नबिये करीम सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैह व सल्लम से अ़र्ज़ करता है –

"अस्सलामो अ़लयका अय्यो हन्नबिय्यो वह रह़मतुल्लाह व

ब–र–कातोहू''

(तर्जुमा – सलाम हुज़ूर पर ऐ नबी और अल्लाह की रह़मत और उसकी बरकतें)

अगर पुकारना मआ़ज़ अल्लाह शिर्क है, तो यह अ़जीब शिर्क है के ख़ास नमाज़ में शरीक व दाख़िल है।

और जाहेलाना ख़याल सिर्फ़ झूटा है के 'अत्तहिय्यात' हुज़ूर के ज़मनाए अक़्दस से वैसी ही चली आ रही है तो मक़सद इन लफ़्ज़ों की अदा है न नबी सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैह व सल्लम की निदा।

हरगिज़ नहीं शरीअ़ते मुताह्हेरह ने नमाज़ में कोई ज़िक्र ऐसा नहीं रखा है, जिसमें सिर्फ़ ज़बान से लफ़्ज़ निकाले जाएँ और मआ़नी मुराद न हों, नहीं बल्कि यक़ीनन यही दरकार है।

''अत्तहिय्यातो लिल्लाहे वस्सलावातो वत्तय्येबातो'' से अल्लाह की ह़म्द का इरादा रखें और ''अस्सलामो अ़लयका अय्यो हन्नबिय्यो वह रह़मतुल्लाह व ब–र–कातोहू'' से यह इरादा करें, के इस वक़्त मैं अपने नबी सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैह व सल्लम को सलाम करता हूँ और हुज़ूर से इरादे के साथ अ़र्ज़ कर रहा हूँ।

'फ़ताव आ़लमगिरी' में 'शरहे क़दवरी' से है –

(तर्जुमा—अल्फ़ाज़े तशह्हुद (अत्तहि़य्यात) के माइनों का दिल में इरादा ज़रूरी है, जैसा के अल्लाह तआ़ला नबी सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैह व सल्लम व ज़ाते अक़्दस और औलिया अल्लाह पर सलामती व सलाम नाज़िल फ़रमाता है।)

''तनवीरुल अब्सार'' और उसकी शरहे़ 'दुर्रे मुख़तार' में है –

(त़र्जुमा – अल्फ़ाज़े 'अत्तहि़य्यात' से उसके माअ़्ने ही मुराद लें जैसा कि अल्लाह तआ़ला अपने नबी व औलिया पर सलामती व सलाम नाज़िल फ़रमाता है। इसी तरह वो खुद अपने पैग़म्बर को सलाम कर रहा है और मुसलमान और औलिया–ए–इकराम को भी, यह ख़याल रखें। इसी का 'मुजतबा' में ज़िक्र है।)

अल्लामा ह़सन शर्नबलानी, ''मुराकियुल फ़लाह़ शरहे़ नूरुल अयज़ा'' में फ़रमाते हैं –

(तर्जुमा – इसी मआ़नी मुराद का इस तरह इरादा करें कि ज़ाते नबी पर सलामती व सलाम का इन्शा हो।)

इसी तरह बहुत से उ़लमा से वज़ाहत की, इस पर कुछ बेवकूफ़ इन्कार करते हैं और यह बहाना करते हैं, कि –

सलातो सलाम पहुँचाने पर फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं तो इनमें निदा (पुकारना) जाइज़ और उनके सिवा में नाजाइज़, और हालाँके ये सख़्त जहालत बेमज़ा है। इसके अलावा बहुत एतराज़ों से जो

इस पर आते हैं। इन होशमंदों ने इतना भी न देखा के सिर्फ़ दुरूद व सलाम ही नहीं बल्कि उम्मत के तमाम काम व आ़माल रोज़ाना दो वक़्त सरकारे अर्श विक़ार हुज़ूर सैयदे आ़लम सल्लल्लाहो तआ़ाला अ़लैह व सल्लम में अ़र्ज़ किये जाते हैं। बहुत सारी ह़दीसों में इसका खुला बयान है कि सब छोटे बड़े आ़माल अच्छे और बुरे सब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैह व सल्लम की बारगाह में पेश होते हैं और यूँ है तमाम अम्बिया इकराम अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम और वाल्देन व अ़ज़ीज़ो अहबाब सबको आ़माल बताए जाते हैं। फ़क़ीर ने अपनी किताब 'सल्तनतुल मुस्तफ़ा फ़ी मलकूते कुल्लुलवरा' में वह सब ह़दीस जमा की थीं।

यहाँ इसी क़दर बस है कि इमामे अजल अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रह़मतुल्लाह अ़लैह, ह़ज़रत सईद बिन मुसय्यब रदीअल्लाहो तआ़ला अ़न्हो से रिवायत है, के –

यानी कोई दिन ऐसा नहीं जिसमें सैयदे आ़लम सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैह व सल्लम पर उम्मत के आ़माल हर सुबह व शाम पेश न किये जाते हों, तो हुज़ूर का अपने उम्मतियों को पहचानना उनकी अ़लामत और उनके आ़माल दोनों वजह से हैं।

फ़क़ीर अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल की तौफ़ीक़ से इस मसले में

एक बड़ी और मोटी किताब लिख सकता है, मगर इन्साफ़ पसंद के लिए इसी क़दर काफ़ी और ख़ुदा हिदायत दे तो एक हुर्फ़ (लफ़्ज़) बहुत है।–ऐ 'काफ़ी' हम को गुमराहों की शरारत से बचा–दुरूद नाज़िल हो हमारे आक़ा मुहम्मद शाफ़ी सल्लल्लाहो तआ़ाला अ़लैह व सल्लम, उनकी आल और उनके दीने साफ़ी के हिमायत असह़ाब पर – आमीन।

सब ख़ूबियाँ अल्लाह को मालिक सारे जहान वालों का।

(मुह़म्मदी, सुन्नी, ह़नफ़ी, क़ादरी, अ़ब्दुल अह़मद

चन्द और बाते

अ़ज़ – मुह़म्मद फ़ारूक़ ख़ाँ अशरफ़ी रज़वी

हुज़ूर सैयदी आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ रह़मतुल्लाह अ़लैह ने ज़ेरे नज़र किताब

''निदा–ए–या रसूलल्लाह''(पुकारो या रसूलल्लाह)में अहादीसे मुबारक, व मोअ़तेबर किताबों से, बुज़ुर्गों को मुसीबत के वक़्त पुकारने के मस्ले को रौशन कर दिया। और यक़ीनन यही सही मज़हब व मस्लके इमामे आ़ज़म अबू ह़नीफ़ा रदीअल्लाहो तआ़ला अ़न्हो है।

अब जो लोग मुसलमान व ह़नफ़ी होने के दावा करते हैं, उन्हें

चाहिए कि वो ''या रसूलल्लाह, या अ़ली, या ग़ौस'' वग़ैरह कहने को ह़क़ व जाइज़ समझें और जो इसे शिर्क या बिदअ़त बताए उन पर लानत भेजे।

यहाँ हम चन्द ह़दीसें और चन्द ऐसे बुज़ुर्गों के क़ौल नक़्ल कर रहे हैं, जिन्हें मानने का दावा वह़ाबी, देवबंदी, मौदूदी वग़ैरह फ़िरक़े के लोग भी करते हैं। हज़रत शेख़ अल्लामा अह़मद बिन ज़ैनी व हल्लान शाफ़ई रह़मतुल्लाह अ़लैह अपनी किताब ''अद्दुरारुस्सन्निया फ़िर्रद्दि अलल वह़ाबिया'' में फ़रमाते हैं –

''वसीले की एक दलील रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैह व सल्लम की फुफी ह़ज़रत सफ़िया रदीअल्लाहो तआ़ला अ़न्हा का वह मर्सिया है, जिसे उन्होंने आपके इन्तेक़ाल के बाद कहा। उसका एक शेर यह है –

(तर्जुमा – या रसूलल्लाह ! आप हमारी उम्मीद हैं – आप हमारे साथ नेकी करते थे, बेरुख़ी नहीं बरतते थे।)

इसी शेर में ''या रसूलल्लाह'' कह कर निदा की गई है और ''आप हमारी उम्मीद हैं'' भी कहा गया है। जिसे सह़ाबा इकराम ने सुना मगर किसी ने नापसंद नहीं किया। (अद्दुरारुस्सन्निया फ़िर्रद्दे अलल वह़ाबिया – सफ़ा नं. 52)

शेख़ अहमद बिन जै़नी अ़लैहिर्रहमा उसी किताब में फ़रमाते हैं –

हदीस में है के जब सहाब इकराम रिदवानुल्लाहे हैम अजमईन ने मुसीलेमा कज़्ज़ाब (झूटे नुबूव्वत के ार) से जिहाद किया तो उनकी ज़बान पर 'या मदांह, या मुहम्मदाह'' का नारा था। (अद्दुरारुस्सन्निया अलल वहाबिया – सफ़ा नं. 61)

किताब में हैं – हज़रत शेख़ जैनुद्दीन मुरागी ुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं ''सल्लल्लाहो अ़लयका या मद'' कहने के बजाए ''सल्लल्लाहो अ़लयका या ल्लाह'' कहना ज़्यादा बहतर है। (अद्दुरारुस्सन्निया अलल वहाबिया – सफ़ा नं. 47)

ोख़ अ़ब्दुल बिन जै़नी उसी किताब में फ़रमाते हैं –

ल्लाह सल्लल्लाहो तआ़ाला अ़लैह व सल्लम से सही ात है – आपने फ़रमाया के जो शख़्स मदद चाहता हो कहे – ''ऐ ख़ुदा के नेक बंदों मेरी मदद करो'' ारुस्सन्निया फ़िर्रद्दे अलल वहाबिया – सफ़ा नं. 34)

त शाह वलीअल्लाह मोहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमा

अपनी किताब में फ़रमाते हैं –

"मैंने अ़र्ज़ की (कहा) या रसूलल्लाह अल्लाह तआ़ला की अ़ता से हमें भी अ़ता फ़रमाईये – आप रह़मतुल्लिल आ़लमीन हैं और हम ख़ैरात लेने के लिए ह़ाज़िर हुए हैं – और आपने मेरी जल्द अ़ज़ीम मदद फ़रमाई है, और मुझे बताया के मैं आइन्दा अपनी ज़रूरतों में कैसे मदद तलब करूँ।" (फ़ुयूज़ुल ह़रमैन सफ़ा नं. 29)

मौलवी अशरफ़ अ़ली थानवी, अपनी किताब "शमीमुल तईब तरजमा शैमुल हबीब" में ये शेर लिखते हैं –

"दस्तगीरी कीजिए मेरे नबी – कशमकश में हूँ तुम ही मेरे वली जुज़ तुम्हारे है कहाँ मेरी पनाह – फ़ौजे कुलफ़त – मुझपे आ ग़ालिब हुई – इब्ने अ़ब्दुल्लाह ज़माना है ख़िलाफ़ – अए मेरे मौला ख़बर लीजिये मेरी

अल्लाह तआ़ला समझने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। – ***आमीन***

यही शेख़ अहमद बिन ज़ैनी अ़लैहिर्रह़मा उसी किताब में नक़्ल फ़रमाते हैं –

"सही ह़दीस में है के जब सह़ाब इकराम रिदवानुल्लाहे अ़लैहिम अजमईन ने मुसीलेमा क़ज़्ज़ाब (झूटे नुबूव्वत के दावेदार) से जिहाद किया तो उनकी ज़बान पर 'या मुह़म्मदाह, या मुह़म्मदाह" का नारा था। (अद्दुरारुस्सन्निया फ़िर्रद्दे अलल वह़ाबिया – सफ़ा नं. 61)

उसी किताब में हैं – हज़रत शेख़ ज़ैनुद्दीन मुराग़ी रह़मतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं "सल्लल्लाहो अ़लयका या मुह़म्मद" कहने के बजाए "सल्लल्लाहो अ़लयका या रसूलल्लाह" कहना ज़्यादा बहतर है। (अद्दुरारुस्सन्निया फ़िर्रद्दे अलल वह़ाबिया – सफ़ा नं. 47)

यही शेख़ अ़ब्दुल बिन ज़ैनी उसी किताब में फ़रमाते हैं –

रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैह व सल्लम से सही रिवायत है – आपने फ़रमाया के जो शख़्स मदद चाहता हो वोह कहे – "ऐ ख़ुदा के नेक बंदों मेरी मदद करो" (अद्दुरारुस्सन्निया फ़िर्रद्दे अलल वह़ाबिया – सफ़ा नं. 34)

हज़रत शाह वलीअल्लाह मोहद्दिस देहलवी अलैहिर्रह़मा

अपनी किताब में फ़रमाते हैं –

"मैंने अर्ज़ की (कहा) या रसूलल्लाह अल्लाह तआ़ला की अ़ता से हमें भी अ़ता फ़रमाईये – आप रह़मतुल्लिल आ़लमीन हैं और हम ख़ैरात लेने के लिए ह़ाज़िर हुए हैं – और आपने मेरी जल्द अ़ज़ीम मदद फ़रमाई है, और मुझे बताया के मैं आइन्दा अपनी ज़रूरतों में कैसे मदद तलब करूँ।" (फ़ुयूज़ुल ह़रमैन सफ़ा नं. 29)

मौलवी अशरफ़ अ़ली थानवी, अपनी किताब "शमीमुल तईब तरजमा शैमुल हबीब" में ये शेर लिखते हैं –

"दस्तगीरी कीजिए मेरे नबी – कशमकश में हूँ तुम ही मेरे वली जुज़ तुम्हारे है कहाँ मेरी पनाह – फ़ौजे कुलफ़त – मुझपे आ ग़ालिब हुई – इब्ने अ़ब्दुल्लाह ज़माना है ख़िलाफ़ – अए मेरे मौला ख़बर लीजिये मेरी

अल्लाह तआ़ला समझने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। –

आमीन

नादे अ़ली

بسم الله الرحمن الرحيم

'नादे अ़ली यम्मुज़हरल अ़जाइब तजेदहु
अव नल्लक फीन्नवाइबे कुल्ले हम्मिव
वग़म्मिन सयनुजली बी नुबुव्वतिका
या रसूलुल्लाह व बे वलयतीका
या अ़लिय्यो या अ़लिय्यो या अ़लिय्यो'

नादे अली पढ़ने के फवाइद

1.बड़ी से बड़ी मुहिम और दुश्वारी हो हर रोज़ 41 बार पढ़े इन्शाअल्लाह बहुत जल्द आसान हो।

2.बराए मरीज़ जो ज़िन्दगी से मायूस हो चुका हो सात बार बारिश के पानी पर दम करके ता सेहत पिलाए इन्शा अल्लाह शिफा पाए।

3.ख़लल जिन्न आसेब वग़ैरह के लिए 15 बार पानी पर दम करके छीटा दे इन्शा अल्लाह दफअ़ हो।

4.कैसा ही रंजो ग़म हो हज़ार बार रोज़ाना बा तहारत पड़े खुदा के फज़ल से सब गम दूर हो ।

5.मज़ीद दौलत जाह व हशमत के लिए 500 बार मुकर्ररा वक़्त और जगह पर पड़ लिया करे।

6.दुश्मनो को मुतिअ करना हो तो उसका तसव्वुर कर के 18 बार पड़ लिया करे ।

7.हुज़ूर पुर नूर सय्य्दे आ़लम सल्लल्लाहो अ़लैही वसल्लम के दीदार करने के लिये कामिल तहारत के साथ इशा की नमाज़ के बाद अव्वल आखिर दरूद शरीफ सौ सौ बार और 500 बार नादे अ़ली पड़े और बा वज़ू सौ जाए इन्शा अल्लाह उसी रात दौलते दीदार से मुशर्रफ़ हो।